न्याय का ईश्वर विचार
B.A I (Hons) भारतीय दर्शन

ईश्वर की समस्या दर्शन की आधारभूत समस्या
में से एक रही है। दर्शन का इतिहास इस बात
साक्षी है कि मानव आदि काल से ईश्वर के विषय
सोचता रहा है।
न्याय दर्शन ईश्वरवादी दर्शन है। यह ईश्
की सत्ता में विश्वास करता है। न्याय दर्शन के प्रणे
महर्षि गौतम को माना गया है। न्याय दर्शन जी
के ऊपर एक परमात्मा के रूप में ईश्वर को स्वीका
है जो चेतना मय है। वात्स्यायन ने कहा है कि
का ईश्वर शरीर धारी है जो सत्-चित् आनन्
स्वरूप है इस परमात्मा को ईश्वर कहा जाता है।
र्शन यह मानता है कि ईश्वर ही विश्व का
ालन कर्ता और संहार कर्ता है। संसार की
ह नित्य परमाणु की सहायता से करता है।
त्येक परमाणु देश, काल, मन और आत्
न्याय दर्शन यह मानता है कि ईश्व
का ज्ञान उसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है।
र की अवधारणा प्रस्तुत किया है। ईश्वर
और दयालु है वह सभी कर्मों से पूर्ण है कि
ने द्वारा किये गये प्राणियों के लिए कर्म
फल को स्पष्ट करते हुए न्याय मान्य
ा गया है कि जिस प्रकार एक पिता अप
लिए कर्म करता है उसी प्रकार ईश्वर प्रा
र्म करता है। वस्तुतः न्यायिको का ईश्
निक शासक, अधिष्ठाता, सुरक्षा-

नियंत्रण रखने वाला तथा जीवों को अपने कर्मों का वास्तविक फल दाता भी है। न्याय का ईश्वर जीवात्मा ईश्वर से सम्बन्ध रखता है। न्याय ने भी कहा है कि जीवों का अनिवार्य रूप से कर्म करना चाहिए। उनके कर्मों का फल मैं दूँगा है।

ईश्वर सृष्टि और पालन कर्ता होने के अतिरिक्त विश्व का संहर्ता भी है जिस प्रकार मिट्टी के घड़े का नाश होता है उसी प्रकार विश्व का भी नाश होता है। जब ईश्वर विश्व में नैतिक और आध्यात्मिक पतन देखता है तब तब विध्वंसक शक्तियों द्वारा विश्व का विनाश करता है।

ईश्वर मानव का कर्म फल दाता है। हमारे सभी कर्मों का नियामक ईश्वर है। जीवात्मा के शुभ तथा अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर सुख तथा दुःख प्रदान करता है।

ईश्वर दयालु है वह जीवों को कर्म के लिए प्रेरित करता है। न्याय का ईश्वर व्यक्ति पूर्ण है जिनमें ज्ञान, सत्ता और आनन्द नि[...]

ईश्वर के इच्छा से मानव मोक्ष को प्राप्त सफल होता है तत्व ज्ञान के आधार पर मानव मोक्ष की कामना करता है। न्याय ईश्वर को अनन्त है। ईश्वर गुणों से युक्त है जिनमें छः गुण प्रधान हैं। इन गुणों को षडैश्वर्य कहा जाता है। आधिपत्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य ये गुण ईश्वर में पूर्ण रूप से व्याप्त हैं।

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए नैयायिकों ने अनेक प्रमाणों का सहारा लि[या]

(1) कारणाश्रित तर्क — सर्व प्रथम नैयायिक

जो व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए ... किया है। उनका कहना है कि नियम एक कारण है जिसके नियन्त्रण कारण ईश्वर है। जो सभी को संचालित करते ... point से फैल कर गयी है जो सभी देखते हुए अन्य ... unconscious है और ईश्वर मानव के भीतर ... ही हो सकता है इसलिए जिसको स्थापित करते हैं उनको ... कर्म कारण नियम पर आधारित है

(2) नैतिक तर्क — ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए न्याय का यह इसरा तर्क है उदाहरण का कहना है कि इस दुनिया में उनका कर्म संबंध भी देखा तक इस विभिन्न लोगों में ज्यादा देखते हैं दुख सुख पाने के लिए कुछ लोग है तो दूसरी तरफ बहुत ही दुखी लोग हैं कुछ लोग बुद्धिमान है तो कुछ लोग मूर्ख। इस नियम के अनुसार विश्व के लोगों में आपस में जो विषमता है इसका भी कुछ न कुछ कारण है क्योंकि बिना कारण के कोई कार्य का प्रादुर्भाव नहीं होता है इसलिए अनुसार मानव के सभी कर्मों का फल पुरस्कृत रहता है

वेदों के प्रमाण पर आधारित तर्क — न्याय के अनुसार वेद धार्मिक ग्रन्थ है और वेद नैतिक नियम संबंधी पद ... जो ईश्वर का विभिन्न आदेश निहित है वेद के लिखित परमार्थत: सत्य है और यह अनुभव की सीमा से परे ... की सत्यता सन्देह रहित है ईश्वर के वचन सत्य हैं इससे ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित किया जाता है

...ों पर आधारित तर्क — ईश्वर के अस्तित्व का प्र... कि श्रुति ईश्वर के अस्तित्व की चर्चा करती ... भी विश्व का स्वामी है सर्वज्ञ है अन्तर्यामी है ज...) है अदृश्य है और संसार के सभी जड़ और ... वस्तुओं का निमित्त है